International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 12 Issue 5|| May, 2023 || PP.86-89

मूल्य अवधारणा एवं मूल्यशिक्षा की प्रासंगिकता

डॉ. अपर्णा त्रिपाठी

एसो.प्रो., शिक्षाशास्त्र विभाग, ए.के.पी.जी. कॉलेज, हापुड़ ।

सारांश

वर्तमान काल, विज्ञान व तकनीक का काल है, जिससे शिक्षा भी अछूती नहीं है। शिक्षण- अधिगम पर विज्ञान व तकनीकी नवाचार के अभूतपूर्व प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा समय की आवश्यकता है। चॉक-डस्टर, व्याख्यान से आगे बढ़कर पारंपरिक व्यवस्था डिजिटल क्लासरूम, स्मार्टफोन, लैपटॉप की तरफ मुड़ रही है, शिक्षा का व्यापक संचार हुआ है, शिक्षकों की क्षमता में वृद्धि हुई है, ज्ञान प्राप्ति अधिक सुगम हो गई है किंतु यह भी एक सत्य है कि शिक्षा के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को तकनीकी ने बाधित किया है। शिक्षा में मशीन के बढ़ते उपयोग ने मानव को भी मशीन ही बनाना आरंभ कर दिया है। ज्ञान पक्ष के अतिरिक्त, मानवीय-सामाजिक पक्ष का विकास भी शिक्षा का विषय है। वर्तमान तथाकथित विकसित संसार आज मानवीय - सामाजिक - राष्ट्रीय मूल्यों के ह्रास तथा अनैतिकता की वृद्धि से पीड़ित है। आधुनिक समय में वैयक्तिक लक्ष्य ही सर्वोपरि हो गए हैं, सामाजिकता एवं राष्ट्रीयता की भावना विलुप्त हो रही है, यहीं मूल्य शिक्षा की आवश्यकता स्वयं प्रमाणित होती है।

***संकेत शब्द** : मूल्य, नैतिकता, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, संविधान*

मूल्य : अवधारणा

जिस प्रकार भोजन का महत्व केवल भोजन की उपस्थिति से नहीं वरन उसकी पौष्टिकता एवं स्वाद से है, उसी प्रकार व्यक्ति की महत्ता उसके उचित गुणों अथवा मूल्यों से है। मूल्य नैतिक आचार संहिता के मूल तत्व हैं। ये होते तो विचार रुप में हैं किंतु प्रकट व्यवहार में होते हैं, अन्य शब्दों में कहा जाए तो मूल्य मानव व्यवहार के मापक हैं।

व्यक्ति व समाज अन्योन्याश्रित हैं। स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था, स्वस्थ सामाजिक जीवन हेतु आवश्यक है और स्वस्थ समाज मूल्य प्रतिष्ठित होता है। दया-करुणा- संवेदना-संगठन चेतना- परोपकार वह गुण हैं, जो समाज की आधारशिला हैं । चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः मनुष्य में मूल्यों का होना उतना ही आवश्यक है जितना कि समाज में। वस्तुतः देखा जाए तो कुछ मूल वैयक्तिक हैं, तो कुछ सामाजिक कुछ राष्ट्रीय हैं तो कुछ सार्वभौमिक या वैश्विक। मूल्य संस्कृति, परंपरा, दार्शनिक और धार्मिक सिद्धांतों द्वारा विकसित होते हैं तथा अमूर्त होते हैं। दर्शन की शाखाओं में मूल्य मीमांसा का एक प्रमुख स्थान है। मूल्यमीमांसा मानव जीवन का लक्ष्य निर्धारित करती है, नीतिशास्त्र में मूल्य, किसी क्रिया के महत्व को दर्शाता है।

भारतीय परंपरा में मूल्य

भारतीय परम्परा में चिरन्तन एवं स्थायी मूल्यों को खोजने का प्रयास किया गया है। इसी के अन्तर्गत भौतिक मूल्यों की अपेक्षा आध्यात्मिक मूल्यों को अधिक श्रेष्ठ निरूपित किया गया है। उपनिषदों में आत्मा तथा ब्रह्म को ही परम मूल्यों का रूप माना गया है। भारतीय दर्शन में मूल्यों का विवेचन "पुरुषार्थ" रूप में

किया गया है। पुरुषार्थ वे विचार हैं जो कि पुरुष (व्यक्ति/कर्ता) को अर्थ अथवा आशय प्रदान करते हैं। चार पुरुषार्थों धर्म- अर्थ- काम- मोक्ष की अवधारणा निम्नवत है-

धर्म - "धृ" धातु से व्युत्पन्न ,इस शब्द का अर्थ "धारण करना है"। हर पदार्थ का जो मौलिक गुण है वह उसमें निहित धर्म है। जैसे पानी का धर्म प्यास बुझाना है। अगर उसे उबाल देंगे तो वह वाष्प बन जाएगा, पर ठंडा होकर फिर प्यास बुझाएगा। वही पानी जमकर बर्फ बन जाएगा और पिघलकर फिर प्यास बुझाएगा। किसी भी स्थिति में पानी अपना मौलिक गुण, अपना धर्म नहीं छोड़ता है। प्रत्येक पदार्थ में निहित वह विशेष गुण जो उसे उपयोगी बनाता है, उसका धर्म है । प्रत्येक परिस्थिति में धर्म के अनुसार आचरण करना हमारे जीवन का लक्ष्य है। धर्म के अन्तर्गत नैतिक-नियम, लौकिक-नियम, शरीर के प्रति धर्म, समाज के प्रति धर्म, अन्य प्राणियों के प्रति धर्म यहाँ तक की पेड़-पौधे आदि वनस्पति जगत के प्रति नियमों की विशद विवेचना भारतीय दर्शन में की गई है। इन्हें नियन्त्रक घटक भी कहा जा सकता है जो कि मानव को नियन्त्रित करते है तथा उसे पशु और मानव के मध्य अंतर अनुभव कराते हैं। कौटिल्य के अनुसार, "भोजन, निद्रा, भय और मैथुन मनुष्य के साथ-साथ पशु में भी पाए जाते हैं। धर्म ही मनुष्य को पशु से अलग करता है।" धर्म का अर्थ ही उत्तम प्रकार के कर्म करना है, अतएव धर्म को पुरुषार्थ चतुष्टय में प्रथम स्थान प्राप्त है।

अर्थ - अर्थ से अभिप्राय साधनपरकता है, अर्थात किसी भी कार्य को करने के लिये जिस भी साधन की आवश्यकता होगी वह ही उसका साधन मूल्य होगा, साधन के बिना किसी परिणाम की कल्पना नहीं की जा सकती है। अर्थ के अन्तर्गत धन, भूमि, कृषि,वाणिज्य,व्यवसाय सम्मिलित हैं। अर्थ का उद्देश्य केवल भौतिक सुख-सुविधाओं और समृद्धि की प्राप्ति नहीं अपितु सामाजिक सदुपयोगिता भी है। अर्थ का महत्व तभी तक है जब तक उससे धर्म की सिद्धि हो।

काम - काम से तात्पर्य है इच्छा, कामना, सुख आदि। किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के लिए किसी न किसी रूप में इच्छा का होना आवश्यक है। इस इच्छा के परिणाम स्वरूप उस कार्य में व्यक्ति प्रवृत्ति होती है, तब वह उसको करने को तत्पर होता है, यहीं साधन की अपेक्षा होती है जो कि अर्थ से मिलती है परन्तु साधनों का भी उपयोग ऐसा हो कि यह अपनी इच्छा की पूर्ति तो करे किन्तु अन्य किसी की इच्छा या अस्तित्व का बाधक न बने यहीं पर धर्म के नियन्त्रण की आवश्यकता होती है। इस प्रकार काम, अर्थ एवं धर्म तीनों को मिलाने से ही शारीरिक एवं सामाजिक व्ययवहार संभव हो पाता है। इसलिये तीनों ही आवश्यक मूल्य माने गये हैं।

मोक्ष - मुच् धातु से बना है, जिसका साधारण अर्थ है - छूटना। भारतीय परम्परा में अस्तित्व को एक जन्म तक सीमित न मानकर अनेक जन्मों तथा कर्मफलों के प्रवाह के रूप में देखा गया है। इन्हीं से छूटना मोक्ष कहा गया है। यह आध्यात्मिक मूल्य है।

आधुनिक भारत तथा मूल्य

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद संविधान की प्रस्तावना में निहित मूल्य यथा समाजवाद, पंथ निरपेक्षता, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय, प्रतिष्ठा व अवसर की समता व बंधुता इत्यादि आधुनिक भारत की आधारशिला बने तथा एक नए पुरुषार्थ चतुष्टय न्याय, स्वतंत्रता, समता और भातृत्व की संकल्पना अस्तित्व में आई जो लोकतांत्रिक गणतंत्रात्मक व्यवस्था के आधारभूत मूल्य हैं। यह नवीन पुरुषार्थ चतुष्टय आधुनिक भारत के सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और धार्मिक मूल्यों की नींव है।

हमारे संवैधानिक मूल्य ,व्यक्ति को कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाकर, उनके अधिकारों और कर्तव्यों के संरक्षण का बोध कराते हैं। इन मूल्यों की सुदृढ़ता पर ही देश समाजिक, आर्थिक शैक्षणिक विकास की ओर अग्रसर है। संविधान ही यह सुनिश्चित करता है कि समाज कैसे व्यवहार करेगा, प्रत्येक नागरिक का क्या कर्तव्य होगा, ताकि जब किसी एक व्यक्ति के अधिकारों की प्राप्त हो रहे हो तो दूसरों के अधिकारों का हनन

न हो। डॉ. भीमराव आंबेडकर ने कहा भी था, "संविधान केवल वकीलों का दस्तावेज नहीं है, बल्कि जीवन जीने का एक माध्यम है।" आजादी के इतने साल बाद भी जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग मूलभूत आवश्कताओं, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य से वंचित है और संविधान के मूल्यों को समाज के द्वारा आत्मसात नहीं किया गया है। अब भी हमारे देश में जाति, लिंग, धर्म और आर्थिक आधार पर भेदभाव है।

मूल्य शिक्षा

आज मूल्यों की अवधारणा में बदलाव आ रहा है, पुरातन मूल्य लुप्त हो रहे हैं, हमारी मान्यताएं परंपराएं प्राथमिकताएं बदल रही हैं। हमने आध्यात्मिकता को नकारा है और पाश्चात्य जगत की चकाचौंध से आकर्षित हैं। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री ग्रेशम का नियम है कि खोटा सिक्का अच्छे सिक्के को चलन से बाहर कर देता है। हम पर भी ग्रेशम का नियम लागू हो गया है। भारत की गौरवपूर्ण परंपरा मूल्यों से ओतप्रोत है।भारतीय मनीषियों ने मानव मूल्यों की विवेचना मानव मात्र के कल्याण की कामना करते हुए की- "सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चिद्दुःखभाग भवेत्" परन्तु आज अनास्था, पारस्परिक अविश्वास, आधुनिकता की भ्रामक अवधारणा, अस्तित्ववादी दर्शन, पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण कर हम अपने आदर्शों, मूल्यों, सांस्कृतिक विरासत से विमुख हो रहे हैं, कार्य व कर्तव्य संस्कृति की बजाए उपभोक्ता संस्कृति की ओर आकर्षित हुए हैं। किंतु यह मूल्य आज भी नहीं हुए हैं। इस समय हम संक्रमण काल से गुजर रहे हैं। आज भी मानव नारी का सम्मान करता है, आज भी मानव मानव के बीच रागात्मक संबंध है, आज भी मानव परपीड़न के पाप और परोपकार के पुण्य को स्वीकार करता है अर्थात कभी हम पूर्व की ओर झुकते हैं तो तभी आधुनिकता की अवधारणा की ओर, इसी वातावरण में मूल्य आधारित शिक्षा की और सभी का ध्यान आकर्षित हुआ है। लोभ की पराकाष्ठा, स्वार्थपरता , विश्वासघात, छलपूर्ण व्यवहार, असत्य, निष्ठाहीनता, निर्दयता, अन्याय, कर्तव्यहीनता, ईर्ष्या, शक्तिलोलुपता को दूर करने तथा राष्ट्रीय जीवन में शाश्वत जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के लिए मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता अनुभव होना स्वाभाविक ही है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान व सूचना प्रदान करना न होकर व्यक्ति का समग्र विकास है अर्थात उसके ज्ञानात्मक भावात्मक व क्रियात्मक पक्षों का विकास। शिक्षा द्वारा न केवल विचार अपितु व्यवहार भी परिष्कृत होना चाहिए। यही कारण है कि भारतीय शिक्षा नीतियों में आयोगों के प्रतिवेदन में मूल्य शिक्षा ने हमेशा ही अपना स्थान सुरक्षित रखा है। मूल्य शिक्षा, नैतिक शिक्षा या धार्मिक शिक्षा से भिन्न है। इसमें विभिन्न विषयों को मूल्यपरक बनाकर छात्रों में मूल्य विकसित किए जाते हैं। विभिन्न पाठ विषयों तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में विषय की विषय वस्तु में विभिन्न मूल्य पहले से ही समाहित होते हैं, यथा- भाषा शिक्षण में सम्मिलित दोहे, कहानी, नाटक स्वयं में मूल्य समेटे होते हैं। जैसे प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी ईदगाह में सहानुभूति,संवेदनशीलता, स्नेह और बड़ों के प्रति आदर है। इसी प्रकार इतिहास अध्ययन में वीरता, आत्मबलिदान, देशभक्ति के मूल्य सम्मिलित होते हैं। कला द्वारा सौंदर्यात्मक मूल्य विकसित होते हैं, तो शारीरिक शिक्षा द्वारा समूह भावना, आज्ञा पालन, दृढ़ संकल्प, अनुशासन इत्यादि। विविध पाठ्यसहगामी क्रियाएं यथा- जयंती, पर्व, राष्ट्रीय दिवस, समाज सेवा, श्रमदान भी छात्रों में विविध मूल्य विकसित करते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में इन मूल्यों से छात्रों को अवगत कराया जाए, छात्रों को इन्हें पहचानने में सहयोग दिया जाए। केवल ज्ञान के लिए ज्ञान न प्रदान किया जाए।

निष्कर्ष

मूल्य शिक्षा के महत्व को सारांश रूप में प्रस्तुत करने के लिए अब्राहम लिंकन के एक प्रसिद्ध कथन को उद्धृत करना समीचीन होगा- "यदि मेरे पास पेड़ काटने के लिए केवल 1 घंटे का समय है तो मैं अपने पहले 45 मिनट अपनी कुल्हाड़ी को घिसकर पैना करने में व्यतीत करूंगा", हमें भी अपनी शिक्षा व्यवस्था को सफल बनाने के लिए इसमें मूल्यशिक्षा को सम्यक प्राथमिकता व कार्यशीलता प्रदान करनी होगी।

संदर्भ:

- Chakraborty, S K & Chakraborty Debangshu (2014) Human Values and Ethics, Himalaya Publishing House Delhi
- जीवन विज्ञान (2013)जैन विश्व भारती संस्थान लाडनूं राजस्थान
- काणे,पी वी (2010) धर्मशास्त्र का इतिहास ,उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ
- Mukherjee, Radha Kamal (1960)The Social Structure of values, S Chand Co. Delhi
- सिंह, जे पी (2017) समाजशास्त्र: अवधारणा एवं सिद्धांत, पी एच आई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली
- Tripathi, A.N.(2009) Human Values,New Age International(P) Ltd. Lucknow
- http://bharatvidya.org/Yoga/myweb/yoga value.htm